Annexure - 18

(108)

Sanskrit and Indian Languages in Global Scenario

Chief Editor
Prof. Geeta Singh

CENTRE FOR PROFESSIONAL DEVELOPMENT IN HIGHER EDUCATION
UGC-HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT CENTRE
UNIVERSITY OF DELHI, DELHI

SHIVALIK PRAKASHAN
New Delhi (INDIA)

" Sanskrit and Indian Languages in Global Scenario" Edited by Prof. Geeta Singh, *et. al*., Shivalik Prakashan, New Delhi

ISBN 978-81-934519-4-6
© CODHE, University of Delhi, Delhi

Price : ₹ 1295

First Edition : 2017

Published by:
SHIVALIK PRAKASHAN
27/16, Shakti Nagar, New Delhi- 110007
Phone: 011-24564680, 42351161
E-mail-shivalikprakashan@gmail.com
Website : http://www. shivalikprakashan.com

No Part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic of mechanical, including photocopying, recording or by any information storage and retirival system without prior written permission from the Author/Publisher.

Published in India

Published by Virendra Tiwari for Shivalik Prakashan , Layout Design by *Convex Publishing Solution* and Printed by *R.K. Offset Printers*, Delhi.

21

शब्दार्थ–साहित्य

डॉ. नीलम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
कु. मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश

भाषा शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में प्रचलित है। सामान्यत: भावाभिव्यक्ति के समस्त साधनों को भाषा कहा जाता है। इस प्रकार के अर्थों में पशु–पक्षियों की बोली, इंगित, विभिन्न संकेत चिह्न और मानव की भाषा को 'भाषा' शब्द के द्वारा ग्रहण किया जाता है। किन्तु इनमें पशु आदि की बोली, इंगित और सांकेतिक भाषा अपूर्ण और अस्पष्ट है। इनके द्वारा गम्भीर भावों की अभिव्यक्ति नहीं की जा सकती है।[1]

भाषा विज्ञान में जिस भाषा का ग्रहण किया जाता है, वह सांकेतिक आदि से भिन्न मानवीय व्यक्त वाणी है। 'भाषा' शब्द के व्युत्पत्तिपरक अर्थ से इसकी पुष्टि होती है। भ्वादिगणी 'भाष्' धातु से भाषा शब्द निष्पन्न है। जिसका अर्थ है– 'भाष व्यक्तायां वाचि'– व्यक्त वाणी। 'भाष्यते व्यक्तवाग् रूपेण अभिव्यज्यते इति भाषा' अर्थात् व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है, उसे भाषा कहते हैं। इस व्यक्त भाषा के द्वारा सूक्ष्मातिसूक्ष्म मानवीय भावों को प्रकट किया जा सकता है।

भाषा के दो आश्रय होते हैं– 1. वक्ता 2. श्रोता। वक्ता के हृदय में किसी वस्तु को देखकर जो भाव जागृत होते हैं, उन्हें वह शाब्दिक रूप देकर प्रकट करता है। इस प्रकार शब्द महत्त्वपूर्ण है। वक्ता के शब्द के अर्थ को श्रोता ग्रहण करता है, तो अर्थ भी महत्त्वपूर्ण है। इस प्रकार शब्द और अर्थ दोनों कड़ी है। भाषिक अभिव्यक्ति में शब्द और अर्थ सम्पृक्त हैं।

शब्द और अर्थ के बिना सम्भाषण ही सम्भव नहीं, तो काव्य की तो बात ही क्या है। समस्त आचार्यों ने शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर माना है। उन्होंने शब्द और अर्थ को यथावत् स्वीकार करके उनके विशेषणों का ही निरूपण अपने काव्य लक्षणों में किया है। काव्य में शब्द और अर्थ के

---

[1] भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र, पृष्ठ 29 द्विवेदी कपिल, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2010